कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

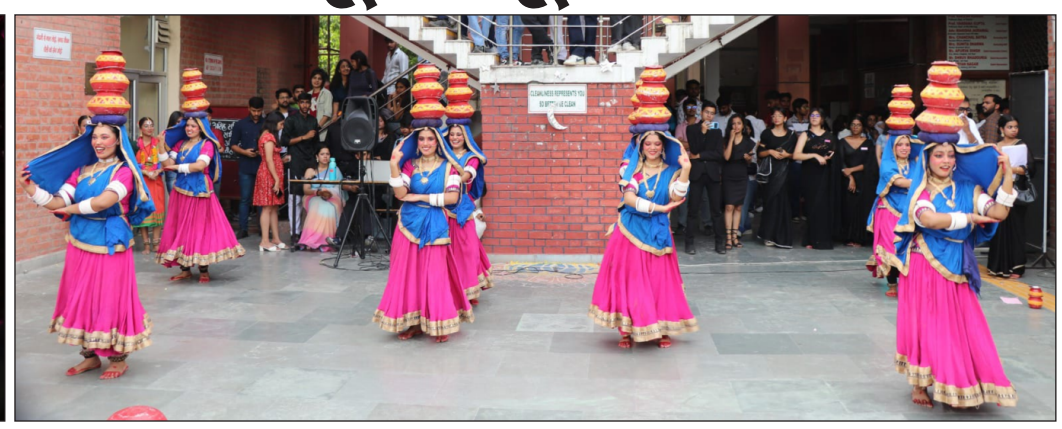
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, जून-जुलाई-अगस्त 2024 | वर्ष 2, अंक 10, पृष्ठ 4

स्पलेंडर में पंजाबी गानों पर खूब झूमे विद्यार्थी

संजीव राज

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव स्पलेंडर 24 की शुरुआत 25 अप्रैल को द नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट्स वेलफेयर सोसाइटी के आरण्य 24 द एनुअल नॉर्थेस्ट फेस्टिवल से हुई। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि सोसायटी का गठन 'ए मोटो ऑफ एंब्रेसिंग यूनिटी' (एकता को गले लगाओ) के आदर्श वाक्य से 2016 में डॉ. प्रभाष कुमार पांडे के प्रयास से हुआ। उस समय नॉर्थ ईस्ट के बच्चों को हिंदी समझने में मुश्किल होती थी। उनके कई प्रश्न और समस्याएं थीं। हमने दिन प्रतिदिन हेल्प डेस्क के माध्यम से उनकी समस्याओं का समाधान किया। स्पलेंडर 24 का पहला दिन पूरी तरह नॉर्थ ईस्ट सोसाइटी को समर्पित है। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के संयुक्त सचिव फ्रैंकलिन एल. खोबंग ने अपने कॉलेज जीवन का अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि एक वास्तविक और गंभीर क्लास मेरे जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा रही। उन्होंने महात्मा गांधी के अनुशासन के महत्व को रेखांकित किया।





राम लाल आनंद महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव स्पलेंडर में पंजाबी गायक जस्सी गिल व बब्बल राय ने धमाल मचाया (बाएं) और राजस्थानी नृत्य से विद्यार्थियों ने लोगों का मन मोहा (दाएं)।

तीन सत्र में सुबह 10 से शाम पांच बजे तक चलने वाले फेस्ट में रिदम ऑफ द हिल्स (फोक डांस) और इको ऑफ द हिल्स (फोक सांग) कॉम्पिटिशन हुए। अंगामी नागा जनजाति के लोकगीत ए रा केज़िवी पर ग्रुप डांस हुआ। मणिपुरी का मैतेई डांस, पूर्वोत्तर का बांस के डंडों के साथ चेराव नृत्य, असम का बिहू डांस, तांगखुल नागा समुदाय का मणिपुरी फेइचक डांस सहित कई प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद दिल्ली विश्वविद्यालय में अफ्रीकी अध्ययन विभाग के प्रो. अवंगशी यारुइंगम ने अपने जीवन का अनुभव बताया। उन्होंने कहा कि वह जब एक छोटे से गांव में 5वीं में पढ़ते थे तो उस समय उनके सामने भाषा को समझने और सीखने की चुनौती थी। उन्होंने कहा कि हर एक चीज संभव है। कुछ भी असंभव नहीं है। मैं कर सकता हूं। मैंने पूरे विश्वास और दृढ़निश्चय से किया। आपके पास भी अच्छा समय है। आप भी कर सकते हैं। अंतिम सत्र सिंफोनी इवनिंग में पलक, पेम कशक, अलल, गर्ल क्रश जेनिफर, बेम खुवुंग और रूपेश ने अपनी प्रस्तुति से सबका दिल जीत लिया। अंत में लाइव बैंड और डीजे रिवॉइक ने बच्चों को डांस करने और झूमने पर मजबूर कर दिया।

इससे पहले सरस्वती वंदना के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुख्य अतिथि का प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और स्टूडेंट यूनियन के संयोजक डॉ. केजी त्यागी ने स्वागत किया। जज के रूप में डॉ. पल्लवी दत्ता, डॉ. प्रभाष पांडेय, डॉ. उर्वशी कुहाड़, बेम खुवुंग और मीनाक्षी ब्रह्मा उपस्थित रहे। अंत में सोसायटी अध्यक्ष थांगलीन सांग ज़ोटे ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सोसाइटी संयोजिका लेइमिवोन ज़िमिक, उप प्राचार्य प्रो. सुभाष चंद्र डबास सहित बड़ी संख्या में कॉलेज के प्राध्यापक मौजूद रहे।

दूसरे दिन महाविद्यालय की समितियों की तरफ से विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 'अभिव्यक्ति' ने 'कथाकृति' प्रतियोगिता का आयोजन किया। समिति ने 'आत्म अभिव्यक्ति' प्रतियोगिता कराई। वेस्टर्न डांस समिति 'इल्यूजन' ने समूह नृत्य 'इंफ्रूनमी' कराया। समूह नृत्य के बाद बैंड ने भी जलवा बिखेरा। वेस्टर्न संगीत समिति ' ग्रासरूट ' के 'थंडर' प्रतियोगिता में कई बैंड समूहों ने भाग लिया। भारतीय संगीत का भी विद्यार्थियों पर जादू देखने को मिला। दस्तूर समिति ने 'स्वर्ण मंजरी' और 'स्वराधना' का आयोजन कराया। दृश्यम की फोटो प्रदर्शनी में सैकड़ों तस्वीरों को शामिल किया गया। इसी क्रम में दृश्यम समिति ने पिक्टेल प्रतियोगिता कराई। दूसरे दिन का समापन हरियाणवी गायक एंडी कुंदू की प्रस्तुति से हुआ।

तीसरा दिन पंजाबी कलाकारों के नाम रहा। अंग्रेजी बीट पर पंजाबी गायक गिप्पी ग्रेवाल ने सभी को खूब थिरकाया। पंजाबी गायक जस्सी गिल और बब्बल राय ने गानों से सबका दिल जीत लिया। जस्सी गिल के साथ विद्यार्थियों ने भी गाया। प्रस्तुति के पहले प्रतियोगिताओं का सिलसिला चला।

आरोह समिति ने 'दार्शनिकों के सदन का मत है कि मृत्यु ही जीवन का परम सत्य है' विषय पर शास्त्रार्थ पेश किया। इल्यूज़न ने फ्रीकआउट एकल नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन और अनंत दृष्टि समिति ने नृत्य दृष्टि एकल नृत्य प्रतियोगिता एवं भृहति समूह नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन कराया। फैशन शो का भी जलवा देखने को मिला। अंत में स्टार नाइट्स के साथ स्पलेंडर 24 का समापन हुआ।

ज़िंदगी के रास्ते पर खेलती उम्र को छोड़ आए हैं... मिस्टर फेयरवेल दिव्यांश मिस फेयरवेल श्रेया सेन

योगेश प्रताप/खुशी शाक्या

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की एनएसएस के वार्षिक उत्सव में पहले दिन 22 अप्रैल को डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग के साथ-साथ कई कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। बीते कुछ सप्ताह पहले एनएसएस का एक साप्ताहिक कैंप राजस्थान के जैसलमेर में लगाया गया था। 'भारत-पाकिस्तान सीमा के पास रह रहे लोगों की जीवन शैली' डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग का विषय था। एनएसएस के सदस्यों ने वहां रह रहे ग्रामीण लोगों से बातचीत की और शिक्षा, स्वास्थ्य, साफ सफाई संबंधी कई काम किए। डॉक्यूमेंट्री में इन्हीं विषयों की जानकारी दी गई।

इसके पश्चात ओपन माइक और एग्जिबिशन ऑफ इनोवेशन प्रतियोगिता शुरू हुई, जिसमें क्रमशः प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। तीसरे स्थान पर रही प्रतिभागी अंशिका की "ज़िंदगी के रास्ते पर खेलती उम्र को छोड़ आए हैं..." कविता ने निर्णायक मंडली को प्रभावित किया। ओपन माइक प्रतियोगिता में निर्णायक मंडली के रूप में डॉ. एनी रे, डॉ. कुलदीप सिंह चौहान मौजूद रहे। संचालन की भूमिका युद्धवीर और रुही ने निभाई।



एनएसएस के वार्षिक उत्सव संकल्प में विद्यार्थियों ने लिया भाग।

एग्जिबिशन ऑफ इनोवेशन में प्रतिभागियों के विचारों को परखा गया और देखा गया कि कैसे यह समाज में बदलाव ला सकते हैं। इसके तहत प्रतिभागियों ने कई तरह के सुझाव प्रस्तुत किए। जहां एक तरफ प्रतिभागी सागर ने एक मोबाइल ऐप को प्रदर्शित किया जो महाविद्यालय में प्रवेश ले रहे छात्रों के लिए सहायक हो सकता है। वहीं दूसरी तरफ नव्या और भव्या ने यूनिक वॉटर बॉटल की पिच रखी। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य समाज में समग्र विकास लाने वाले विचारों की आगे लाने का था। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडली के रूप में प्रो. प्रेरणा दीवान और डॉ. शालिनी साहू मौजूद रहीं। एग्जीबिशन ऑफ इनोवेशन प्रतियोगिता में संचालन की भूमिका खुशी वशिष्ठ और आस्था मिश्रा ने निभाई।

ओपन माइक प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान आरुषि, द्वितीय स्थान शांभवी और तृतीय स्थान पर अंशिका ने बाजी मारी। एग्जिबिशन ऑफ इनोवेशन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान नव्या और भव्या, द्वितीय स्थान सागर चतुर्वेदी ने प्राप्त किया।

दूसरे दिन 23 अप्रैल को कई गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें गायन, झलक, नृत्य, क्विज़ और अनेक प्रकार के खेल आयोजित किए गए। सभी प्रतियोगिताएं कॉलेज स्तर पर कराई गईं। इसमें बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। मिरांडा, श्री अरबिंदो कॉलेज, हिंदू सहित कई कॉलेजों के बच्चे इस प्रतियोगिता का हिस्सा बने और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन दिया। क्विज़ में 22 प्रतिभागी शामिल रहे। इसी तरह से झलक, नृत्य तरंगिनी और ध्वनि में भी प्रतिभागी मौजूद रहे।

सबसे पहले प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की शुरुआत से झलक, गायन और नृत्य तरंगिनी का क्रम रहा। गायन में स्नेहा, अरविंद, फ़ैज़ान ने भाग लिया। प्रस्तुति के लिए सांस्कृतिक गीतों का चुनाव किया। दूसरी तरफ़ एनएसएस के कुछ सदस्य अपने लगाए हुए खेलों से मनोरंजन कर रहे थे। दधीचि का प्रतिनिधित्व करने आए विशाल चड्ढा ने मौजूद लोगों को देह दान करने को प्रेरित किया और दिल्ली एनएसएस यूनिट डायरेक्टर श्रवण ने महाविद्यालय के प्राध्यापक और संयोजक को किताब भेंट की। एनएसएस की बनाई डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की गई। इसमें यूनिट के 40 सदस्य जैसलमेर का दौरा करते दिखे, जो 2 फरवरी से 9 फरवरी 2024 तक रहा।

अंत में परिणाम घोषित हुए, जिसमें क्विज़ में टीम एक्यूरा, झलक से टीम प्रिंस, नृत्य तरंगिनी में दिग्विजय और ध्वनि से आर्यन चिब ने जीत का ख़िताब अपने नाम किया।

मिस फेयरवेल श्रेया सेन



प्राचार्य एवं निर्णायक मंडली ने विजेताओं को सम्मानित किया।

अंशिका वर्मा

नई दिल्ली। अब आप फाइनल परीक्षा के पड़ावों से गुज़र कर एलुमनाई बनेंगे। आपका कर्तव्य एक शिक्षक का होगा और जूनियर्स को आपके गाइडेंस और इंस्पिरेशन की जरूरत पड़ेगी। ईश्वर से आपके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना और आपको शुभकामनाएं। यह बातें प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों से संबोधन के दौरान कही। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 10 मई को वर्ष 2021 बैच के तीन साल पूरे होने पर तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों का विदाई समारोह मनाया गया।

आयोजन में प्रतियोगिता हुई, जिसमें दो राउंड रखे गए थे। पहला इंट्रोडक्शन और रैंप व फाइनल टैलेंट राउंड था। प्रतिभागियों ने डांस, शायरी व खुद के कंपोज गाने से अपना टैलेंट दिखाया। बेस्ट स्टूडेंट्स ऑफ द ईयर रहे श्रृंगारिका उपाध्याय, रौनक सिंह, निकिता, अक्षित कटोच आदि ने अपने तीन वर्षों के अनुभवों को साझा किया। छात्र संघ अध्यक्ष मनस्वी बांगड़ ने धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं आज जो हूं वह इस कॉलेज के शिक्षकों की बदौलत हूं। उपाध्यक्ष अलीना सिन्हा ने भी विचार रखे। इंडियन म्यूजिक सोसायटी दस्तूर ने गानों के मिक्सअप गाकर शाम को खुशनुमा बना दिया।

मिस्टर फेयरवेल दिव्यांश और मिस फेयरवेल श्रेया सेन बनी। इसके साथ ही मिस्टर वेल-ड्रेस्ड अनिमेष और मिस वेल-ड्रेस्ड वंशिका चुनी गई। निर्णायक के तौर डॉ. रीता जैन, डॉ. कीर्ति पुनिया और अरुण कुमार उपस्थित रहे।

संपादन एक महत्वपूर्ण अवसर

पहले मेरे मन में बहुत झिझक थी। मैं विभाग के ई–न्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' से दूर रहने की कोशिश करता रहा। डॉ. अटल तिवारी सर ने मुझसे कहा कि यह झिझक और डर तभी दूर होंगे जब प्रयास करोगे। यह डर, झिझक सिर्फ तब तक है, जब तक तुम कोशिश नहीं करते हो। सर को मुझ पर विश्वास था और मैंने प्रयास किया। जब मैंने संपादक का पद संभाला तब मुझे एहसास हुआ कि यह बिलकुल भी कठिन नहीं बल्कि एक मजेदार कार्य है। मेरा अनुभव काफी अच्छा रहा।


अनुराग

संपादक का पद एक जिम्मेदारी है, जिसने मुझे और अधिक जिम्मेदार इंसान बनाया। अपने संपादन काल में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। अगर मैं संपादक नहीं बनता तो मुझे कभी पता ही नहीं चलता कि यह कितना खास काम है।

संपादन एक अवसर है। यदि आपको यह अवसर मिलता है तो आपको यह अवसर जरूर अपनाना चाहिए, क्योंकि आप कॉलेज में तीन–चार साल के लिए होंगे। इस दौरान विद्यार्थी अधिक होंगे। यह मुमकिन नहीं कि सभी संपादक बन सकें तो आपको इस अवसर को आगे बढ़कर अपनाना चाहिए। संपादन से मेरी समझ विकसित हुई है। इससे मेरे जीवन में बहुत से सकारात्मक सुधार हुए हैं, जैसे निरंतरता, धैर्य आदि और इन्हीं के साथ मुझे क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर भी सीखने को मिला। जीवन में सफल होने के लिए जिम्मेदार होना बहुत जरूरी है। संपादन जिम्मेदारी का एक अच्छा अभ्यास है। संपादन की प्रक्रिया मजेदार थी। हर पल मेरे लिए अनुभव भरा रहा। संजीव और दीपक के साथ कार्य करने में मज़ा आया।

अच्छा संपादक बनने के लिए आपको पहले एक अच्छा पाठक बनना होगा। समाचार पत्र में केवल खबरें न पढ़ें बल्कि समाचार पत्र की सरंचना को समझने की कोशिश करें। एक आम पाठक और एक संपादक के ख़बर पढ़ने में फर्क होता है। एक ख़बर को पांच एंगल से पढ़ा जा सकता है। जितना ज्यादा अभ्यास करेंगे उतना जल्दी और अच्छे संपादक बनेंगे। हमेशा सीखते रहें, क्योंकि यह प्रक्रिया कभी खत्म नहीं होगी। अपने कार्य में कुछ नयापन लाने की कोशिश करें और नए प्रयास करते रहें। सीखने में गलतियां होना स्वाभाविक है। गलतियों से डरे नहीं। यदि आपसे गलतियां हो रही हैं तो समझिए कि आप सीख रहें है। इस अवसर का पूरी तरह सदुपयोग करें।

भानु भारती को राष्ट्रीय कालिदास सम्मान

संजीव राज

नई दिल्ली। मशहूर थिएटर निर्देशक और नाटककार भानु भारती को मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग की ओर से संस्कृति व साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय कालिदास सम्मान (रंगकर्म) 2022 दिया जाएगा। कालिदास सम्मान भारत के मध्य प्रदेश की सरकार की ओर से दिया जाने वाला प्रतिष्ठित कला सम्मान है। इसकी स्थापना सन् 1980 में की गई थी। यह सम्मान इन्हें रंगकर्म में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जा रहा है। मेवाड़ के भील समुदाय की रंग परंपरा से लेकर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में रंगकर्म की आधुनिक दीक्षा तक उन्होंने सीखा। राजस्थान विश्वविद्यालय के रंग–शिक्षण, दिल्ली के श्रीराम सेंटर और भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर आदि को उन्होंने नेतृत्व दिया।

भानु भारती का जन्म 1947 में अजमेर राजस्थान में हुआ था। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से 1973 में उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। यहीं पर उन्होंने सर्वश्रेष्ठ ऑल राउंड छात्र और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक पुरस्कार जीते। इसके बाद आगे के शिक्षा के लिए जापान चले गए। जापान में उन्होंने टोक्यो विश्वविद्यालय में जापान के पारंपरिक रंगमंच का अध्ययन किया। इसके बाद इन्होंने रंगमंडल थिएटर समूह की स्थापना की। भानु भारती आदिवासी और लोक कलाकारों के साथ अपने थिएटर प्रोडक्शन और कोरियोग्राफी के लिए जाने जाते हैं। जिनमें केएन पणिक्कर के पशु गायत्री, काल कथा और अमर बीज शामिल हैं। ये सभी राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र के भील जनजाति के अनुष्ठानों पर आधारित हैं। उनके नाम पचास से ज़्यादा नाटकों का श्रेय है। उनकी प्रमुख कृतियां हैं: चंद्रमा सिंह उर्फ़ चमकू, रस गंधर्व, अज़र का ख्वाब और यमगाथा। पशु गायत्री, कथा कही एक जले पेड़ ने और अमर बीज जैसी उनकी कृतियां राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र की भील जनजाति के प्रदर्शनों और अनुष्ठानों के उनके अध्ययन पर आधारित हैं।



आदिवासी रीति–रिवाजों पर उनके अध्ययन पर आधारित इनके थिएटर प्रोडक्शन इन्हें एक अलग कलाकार और निर्देशक बनाते हैं। इन्होंने भीलों के नृत्य थिएटर गवरी पर एक फिल्म का निर्देशन किया। भानु भारती ने 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 1978 तक जयपुर स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय के नाटक विभाग का नेतृत्व किया। उन्होंने एनएसडी सहित कई प्रसिद्ध संस्थानों में नाट्य साहित्य, दृश्य डिजाइन और अभिनय भी पढ़ाया है।

उन्होंने दिल्ली स्थित श्री राम सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स के निदेशक के रूप में कार्य किया है और उदयपुर स्थित भारतीय लोक कला मंडल का नेतृत्व किया है। उदयपुर के पास गोगुंडा बेल्ट के भील आदिवासियों के साथ काम किया है । वह राजस्थान संगीत नाटक अकादमी और राजस्थान साहित्य अक. ादमी के अध्यक्ष भी रहे हैं। एक ऐसे कलाकार जो पात्रों की आंतरिक मनोवैज्ञानिक दुनिया और नाटक के अंतर्निहित दार्शनिक और पौराणिक अंतर्धाराओं को प्रकट करने में काफी सक्षम हैं। भानु भारती ने कई प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए कई नाटकों का निर्देशन किया है। ग्रामीण और शहरी दोनों तरह के अभिनेताओं के साथ काम किया है।

इस प्रकार, भारतीय रंगमंच को एक नया अर्थ दिया। भानु भारती को रंगमंच के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें संगीत नाटक अकादमी द्वारा वर्ष 1997 में दिया गया संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, भारत की राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार शामिल हैं।

भानु भारती ने कई राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निर्देशन किया है। 2004 में चंडीगढ़ के टैगोर थिएटर में उनके नाटकों का तीन दिवसीय थिएटर महोत्सव आयोजित किया जा चुका है। भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ पर दिल्ली के विजय चौक में आयोजित मेगा इवेंट 2006 में प्रवासी भारतीयों के लिए प्रवासी भारतीय दिवस समारोह, भारत की स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में दिल्ली में आयोजित भारत उत्सव आदि। हर साल आज थिएटर कंपनी दिल्ली में अपने स्वयं के प्रोडक्शन का थिएटर फेस्टिवल प्रस्तुत करती रही है। इसकी ख्याति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैल चुकी है और भानु भारती को अपने समय के सबसे नवोन्मेषी निर्देशकों में से एक माना जाता है।

80 से 90 प्रतिशत सर्वाइकल कैंसर की वजह ह्यूमन पेपिलोमा वायरस





तरंग

TARANG 90.0 FM

राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर में सीनियर कंसलटेंट डॉ. शुभम जैन पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की छात्रा दिव्या ने सर्वाइकल कैंसर के विभिन्न पहलुओं पर उनसे बातचीत की। उसी बातचीत के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

सर्वाइकल कैंसर आम व्यक्ति की भाषा में आखिर होता क्या है?

कैंसर हमारे शरीर के कुछ सेल्स, जो कि खराब होने लगे हैं उनका रोग होता है। इसमें उन सेल्स के नंबर में बहुत जल्दी मल्टीप्लाई होना पाया गया है। जो सेल्स बहुत जल्दी मल्टीप्लाई होते हैं, यह काफी हद तक खराब होते हैं। जो नॉर्मल काम करना होता है, वह नहीं कर पाते हैं और आसपास के टिशू, सेल्स को भी काम नहीं करने देते हैं। इनका बहुत ज्यादा तेजी से सोलिट्रेशन या मल्टीप्लीकेशन होता है। यह कैंसर का मुख्य कारण होता है।

कोई व्यक्ति कैसे पता लगा सकता है कि वह सर्वाइकल कैंसर से पीड़ित है और उसे डॉक्टर के पास जांच के लिए कब जाना चाहिए?

कैंसर के लक्षण बहुत ही सामान्य होते हैं। शुरुआती स्टेज में सामान्य लक्षण होते हैं जैसे कि अगर किसी को स्तन का कैंसर है तो शुरुआती स्टेज में एक बहुत ही साधारण सी गांठ होगी, जिसमें महिला को कोई डर नहीं होगा। शुरुआती स्टेज में एक बहुत साधारण सा कोई छाला होता है, जो भर नहीं रहा होता है। इस वजह से बीमारी को शुरुआती स्टेज में पकड़ पाना काफी हद तक मुश्किल होता है। जब यह बीमारी और अंगों को भी इफेक्ट करती है। उनको भी प्रभाव आने लगता है, तो भी इसके लक्षण काफी सामान्य से रहते हैं, जैसे–थकावट होना, भूख कम लगना, काम कम कर पाना। केवल इन लक्षणों को देखकर बता पाना कि किसी व्यक्ति को कैंसर है या कुछ और है मुश्किल होता है। अगर असामान्य लक्षण हो रहे हों जो लंबे समय तक दवाई से या खुद से ठीक नहीं हो रहे हों तो उसके लिए विशेषज्ञ को दिखाकर उसमे कैंसर की जांच कराना जरूरी है। मरीजों में कुछ सामान्य लक्षण होते हैं कि गांठ बन रही हो, जिसमें दर्द न हो जो धीरे–धीरे बढ़ रही हो, मुंह में कोई छाला हो रहा हो, जिसमें दर्द न हो रहा हो, रिसाव हो रहा हो, यदि किसी की आवाज में बदलाव आ गया हो, पीलिया हो रहा हो, जिसमें सुधार नहीं हो रहा हो, ऐसे अनेक बड़े लक्षण होते हैं। इसी के साथ पेशाब या लैट्रीन के रास्ते खून का रिसाव हो रहा हो, जो नॉर्मल नहीं है। ऐसे कुछ लक्षण होते हैं, जिनसे हम बीमारी के बारे में पता कर सकते हैं।

काफी सर्वाइकल कैंसर ह्यूमन पेपिलोमा वायरस के कारण होते हैं तो क्या एचपीवी वैक्सीन से सर्वाइकल कैंसर से बचा जा सकता है?

काफी सर्वाइकल कैंसर ह्यूमन पेपिलोमा की वजह से होते हैं। 80 से 90 प्रतिशत जो सर्वाइकल कैंसर देखते हैं, उसमें एचपीवी काफी हद तक जिम्मेवार होता है। एचपीवी के अगेंस्ट जो वैक्सीन होती है, यदि 9 से 14 वर्ष की लड़कियों में दें तो इससे हाई रिस्क वेरिएंट्स, हाई रिस्क चांस जो होते हैं तो पेपिलोमा वायरस के इंफेक्शन से बचाव किया जा सकता है। ऐसा करके बॉडी की इंफेक्शन से लड़ने की क्षमता बढ़ाई जा सकती है। रिसर्च के अनुसार इससे काफी हद तक कैंसर में कमी आती है।

क्या सर्वाइकल कैंसर जेनेटिक भी हो सकता है?

इस पर अभी शोध चल रहा है। बहुत अच्छे तरीके से अभी इसके बारे में हमें इनफॉरमेशन नहीं है कि कितने केस जेनेटिक कारणों की वजह से होते हैं, क्योंकि ज्यादातर केस जो हम देखते हैं वे एचपीवी इनफेक्शन के कारण होते हैं, जिनका जेनेटिक डिजीज नहीं होता है।

इंडिया की कितनी परसेंट पापुलेशन सर्वाइकल कैंसर से पीड़ित है?

सर्वाइकल कैंसर से देश की बड़ी आबादी पीड़ित है। यह महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे कॉमन कैंसर है। भारत में इससे बचाव के लिए दो सबसे मुख्य तरीके होते हैं। प्रथम सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग या जागरूकता है और दूसरा वैक्सीनेशन है। इन फैक्ट विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक 90–70–90 का नारा भी दिया है, साल 2030 तक सर्वाइकल का एपिसोड खत्म करने के लिए। उसमें मूल रूप से जो भी 9 से 14 वर्ष की आयु तक के बीच में कन्या सर्वाइकल कैंसर वैक्सीन या कुछ भी वैक्सीन के लिए एलिजिबल है, उनका अगर 90 प्रतिशत कवरेज हो, जो 70 फीसदी एलिजिबल महिलाएं हैं, अगर उनको हम सर्वाइकल कैंसर के लिए एम्स में से स्क्रीन कर सके और जिन भी महिलाओं में ऐसी बीमारी के लक्षण पाए गए हैं, उनको यदि 90 फीसदी महिलाओं को इस एप्रोच से ट्रीट कर सकें तो शायद वर्ष 2030 तक हमारे देश में जो सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मृत्यु है, उसको हम खत्म कर पाएंगे, नहीं तो काफी हद तक रोक थाम कर ही लेंगे।

क्या सर्वाइकल कैंसर मल्टीपल सेक्सुअल पार्टनर्स की वजह से भी हो सकता है?

सर्वाइकल कैंसर के लिए ह्यूमन पेपिलोमा वायरस एक प्रमुख कारण होता है। मल्टीपल सेक्सुअल पार्टनर के होने से भी इस इन्फेक्शन के होने की संभावना ज्यादा बढ़ जाती है। जिन महिलाओं की मल्टीपल सेक्सुअल पार्टनर्स की हिस्ट्री होती है, तो उनमें ज्यादा कॉमनली सर्वाइ. कलकैंसर या एचपीवी इनफेक्शन पाते हैं।

मेनोपॉज के बाद भी सर्वाइकल कैंसर होने के चांसेस हैं?

65 वर्ष की आयु के बाद जनरली हम सर्वाइकल कैंसर के लिए स्क्रीनिंग नहीं करते हैं। बहुत ही कम केस में मेनोपॉज के बाद भी सर्वाइकल कैंसर हो सकता है, क्योंकि अगर इंफेक्शन है और यदि किसी महिला का यूट्रस और सर्विक्स रिमूव नहीं किया गया है तो अंग वहां पर है तो कैंसर हो सकता है, लेकिन इसके चांसेस कम हो जाते हैं। ऐसी बहुत कम महिलाएं देखने को मिलती हैं, जिनको सर्वाइकल कैंसर है जो सबसे ज्यादा प्रिवलेज एज ग्रुप होता है वह 40 से 50 वर्ष होता है, जो एक परिमिनो पॉजिटिव एज ग्रुप है।

क्या सर्वाइकल कैंसर में भी कीमो थैरेपी का कोई रोल है?

सर्वाइकल कैंसर प्रेडोमिनेंटली रेडियो थेरेपी से और सर्जरी से ठीक किए जाते हैं। किसी भी कैंसर में तीन प्रमुख ब्रांच होती हैं–सर्जरी, रेडियो थेरेपी और कीमोथेरेपी। सर्जरी से हम जो अंग बीमारी से इफेक्ट हुआ है, उसको निकाल देते हैं। रेडियो थेरेपी तब करते हैं, जब हम वह अंग किसी कारण से नहीं निकाल सकते कि बीमारी बहुत ज्यादा लोकली बड़ी है। बहुत ज्यादा डैमेजिंग सर्जरी होगी या रेडिएशन से हम उस बीमारी को छोटा करना चाहते हैं, जिससे सर्जरी आसान हो जाए। कीमोथेरेपी तब करते हैं जब बीमारी उस जगह पर लोकलाइज नहीं है। बीमारी के फैलने का खतरा ज्यादा है या बीमारी को हम छोटा करना चाहते हैं या हम रेडिएशन का असर थोड़ा और इंप्रूव करना चाहते हैं। ज्यादातर जो सर्वाइकल कैंसर के केस होते हैं उनमें रेडिएशन और रेडिएशन के साथ कीमोथेरेपी इसका असर बढ़ाती है। ऐसे में कीमो रेडिएशन मोडालिटी को यूज किया जाता है। जो अर्ली केस होते हैं उनमें हम कभी–कभी खाली सर्जरी करके बीमारी को निकाल देते हैं और बैरली कभी रेडिएशन की आगे जरूरत होती है। जो बहुत एडवांस केस होते हैं जिसमें हमको लगता है कि दोनों करके फायदा नहीं है तो उनकी केवल कीमो थेरेपी करते हैं। पर्सनलाइज ट्रीटमेंट, इंडिविजुअलाइज ट्रीटमेंट प्लेन होता है, जो अलग–अलग फैक्टर को ध्यान में रखकर अलग–अलग पेशेंट को रिकमेंड किया जाता है कि किस पेशेंट के लिए सर्जरी सही रहेगी और किस केस में रेडिएशन या किस केस में कीमो थेरेपी रेडिएशन का कॉम्बिनेशन।

अंत में आप उन महिलाओं को क्या संदेश देना चाहते हैं जो सर्वाइकल कैंसर से पीड़ित है या फिर इससे पार चुकी हैं?

जागरूकता ही सबसे बड़ा बचाव है। किसी भी कैंसर के लिए जागरूकता महीना मनाया जाता है। सर्वाइकल कैंसर के लिए जनवरी इसीलिए है कि काफी महिलाएं अपनी समस्याओं को सामने नहीं लाती हैं। किसी डॉक्टर से नहीं मिलती हैं। बहुतों को पता ही नहीं होता है कि यह किसी बीमारी के भी लक्षण हो सकते हैं। वह झिझकती है अपनी समस्या किसी के आगे लाने में। मेरा कहना है कि महिलाएं डरे नहीं। कैंसर ऐसी बीमारी है, जिसका जितना जल्दी हम पता लगा सकते हैं उतना ज्यादा आसानी से सफलतापूर्वक इलाज कर सकते हैं। इस वजह से 90–70–90 डब्लूएचओ का नारा है। यदि हम अपनी 90 कन्याओं को वैक्सीनेटर कर सकते हैं 9 से 14 साल की उम्र में तो बहुत बड़ा कदम होगा। इस बीमारी पर रोकथाम पाने के लिए वैक्सीनेशन अनिवार्य है। दूसरा यदि एम्स में हम सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग 70 फीसफी महिलाओं को प्रोवाइड कर सके तो सर्वाइकल कैंसर के केस जल्दी पकड़ पाएंगे, जिससे उनका इलाज ज्यादा आसानी से हो पाएगा। यदि हम 90 फ़ीसदी ऐसी महिलाओं का इलाज कर पाएंगे तो उम्मीद है कि हम बीमारी पर विजय पा पाएंगे और जो महिलाएं इस बीमारी को ऑलरेडी हरा चुकी है, वह और महिलाओं में इस बीमारी के प्रति अवेयरनेस फैलाएं, जिससे कि जो फायदा इलाज से उनको हुआ है और महिलाओं तक भी पहुंचे।

खुद की पहचान खोजने में मदद करती है 'अस्मि'

खुशी चौहान

नई दिल्ली। अस्मि लिंग संवेदीकरण समिति है। यह समिति खुद की पहचान को खोजने में सहायता करती है। इसका उद्देश्य सिर्फ लिंग के आधार पर असमानता को खत्म करना नहीं बल्कि समाज की अदृश्य बेड़ियों को तोड़ने में योगदान देना भी है, जो मनुष्य को महिला और पुरुष लिंग में बांटकर उनकी पहचान निर्धारित कर उसे सीमित कर देती है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय की समिति अस्मि की संयोजक प्रो. श्रुति आनंद ने समिति के फिल्म स्क्रीनिंग कार्यक्रम के अवसर पर कही।

महाविद्यालय के एम्फी थिएटर में समिति ने 'लापता लेडीज' फिल्म की स्क्रीनिंग का कार्यक्रम आयोजित किया। फिल्म की कहानी का मूल सशक्तीकरण और आत्म खोज पर निर्धारित था। फिल्म में महिलाओं को सामाजिक बाधाओं से मुक्त होने और अपने वास्तविक स्वरूप को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। फिल्म लचीलापन, साहस और नारी के अदम्य साहस का संदेश देती है। समिति का उद्देश्य जागरूकता फैलाना और विद्यार्थियों को दिलचस्प तरीके से लिंग संवेदीकरण के प्रति अधिक जानकारी देना था। इसी के साथ अंत में समिति की ई–जर्नल पत्रिका 'स्पीक अप' भी प्रस्तुत की गई। साथ ही समिति के सदस्यों को पुरस्कृत भी किया गया।

खेल से जीवन में अनुशासन आता है: प्रो.पाणि

खुशी चौहान

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय से न केवल खिलाड़ी निकल रहे हैं, बल्कि देश के जेम्स भी जन्म ले रहे हैं। विद्यार्थियों को जीवन में स्थिरता और निरंतरता के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। शांतिपूर्वक सफलता तनाव पूर्ण सफलता से बेहतर है, जो सफलता खुद को हानि पहुंचा कर मिले उस सफलता से कभी खुशी नहीं मिलती। यह बातें मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन ऑफ़ कॉलेज प्रो. बलराम पाणि ने राम लाल आनंद महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के वार्षिक खेल पुरस्कार वितरण समारोह में कही। प्रो. बलराम पाणि ने कहा कि खेल सिर्फ खेल नहीं है उसमें न जाने कितने प्रकार



डीन ऑफ कॉलेज प्रो. बलराम पाणि ने समारोह को संबोधित किया।

के संस्कार भी हैं, जो समाज और देश दोनों का विकास करने में सहायता करते हैं। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथि सहित समारोह में मौजूद सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों का स्वागत किया।

इसके बाद पुरस्कार वितरण समारोह की शुरुआत हुई, जिसमें महाविद्यालय के कई खिलाड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जूडो में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए स्तुति ग्रोवर को, खोखो में बेहतरीन खेलने के लिए विकास को और ऐसे ही अलग–अलग खेलों (क्रिकेट, वॉलीबॉल, ताइक्वांडो आदि) में महाविद्यालय का नाम रोशन करने वाले विद्यार्थियों और खेलों में हिस्सा लेने वाले शिक्षकों और कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

शारीरिक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप शर्मा ने कहा कि महाविद्यालय का उद्देश्य सिर्फ खेल गतिविधियां कराना नहीं बल्कि हर एक व्यक्ति स्वस्थ रहे और खेल गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भाग ले, यह है। इसीलिए हर साल विभागों के बीच व महाविद्यालय के सभी टीचिंग और नॉन टीचिंग स्टाफ के लिए भी प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। हर साल फिटनेस अवेयरनेस कैंप लगता है। इंटर डिपार्टमेंट टूर्नामेंट में बेस्ट डिपार्टमेंट पुरस्कार स्टेटिस्टिक्स विभाग को मिला।

इसी के साथ आयोजित फिटनेस कैंप में विद्यार्थियों का वजन, लंबाई और बॉडी मास इंडेक्स की जांच की गई। कैंप महाविद्यालय के फ्रंट लॉन में आयोजित हुआ। विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप शर्मा और डॉ. विशाल गोस्वामी के नेतृत्व में हुए इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भागीदारी की।

वसुधा संदेश : प्रकृति की सुरक्षा हमें ही करनी है

खुशी चौहान

नई दिल्ली। प्रकृति से मिलते फल, सब्जियां, दवा आदि चीजें भी वह खुद नहीं खाती बल्कि हम सब इस्तेमाल करते हैं। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के उप प्राचार्य डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने कही।

वसुधा : द इको क्लब समिति के 24 अप्रैल को प्रणया 2.0 वार्षिक उत्सव में समिति ने चार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। समिति संयोजक डॉ. वीरेंद्र बहादुर सिंह ने कहा हमारे आसपास हर चीज प्रकृति से जुड़ी हुई है। इसकी सुरक्षा हमें ही करनी है। सबसे पहले 'प्रकृनीति पॉलिसी मेकिंग' प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था 'बंगलुरु जल संकट और हम टिकाऊ तरीकों से इससे कैसे निपट सकते हैं।' इस प्रतियोगिता को दो राउंड में विभाजित किया गया था। इसकी निर्णायक मंडली में डॉ. रोशन लाल मीणा और प्रो. अरुण कुमार ने भूमिका निभाई। इसमें 15 टीमों ने अलग–अलग महाविद्यालय से भाग लिया था।

इसी के साथ विजुअल विस्ता नाम से पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का



प्रणया 2.0 वार्षिक उत्सव में वसुधा: द इको क्लब समिति के सभी सदस्य

आयोजन किया गया। इसमें 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। प्रतियोगिता की थीम 'पृथ्वी बचाओ' थी। इसकी निर्णायक मंडली में डॉ. रवीश लाल और डॉ. पूजा यादव शामिल थीं।

क्विज में प्रतिभागी टीम बनाकर भाग ले सकते थे। इसको भी दो राउंड में बांटा गया था। प्रतिभागियों को प्रथम राउंड में 20 मिनट में 15 सवाल हल करने थे, जिसमें पहले राउंड में 20 टीमों ने भाग लिया था। इसकी निर्णायक मंडली में डॉ. अरुण कुमार और डॉ. विजय कुमार भाटिया थे।

इसी के साथ समिति की सुखी प्रतियोगिता 'बेस्ट आउट ऑफ़ वेस्ट' का आयोजन हुआ, जिसमें वेस्ट मटेरियल से रचनात्मक वस्तु बनानी थी। इसमें निर्णायक मंडली का कार्यभार डॉ. मानवेश नाथ दास और डॉ. कमल कुमार ने संभाला।

एम्फी थिएटर में समारोह के समापन के साथ सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सर्टिफिकेट और नकद इनाम देकर सम्मानित किया गया। पॉलिसी मेकिंग प्रतियोगिता के प्रथम विजेता सोमल गुप्ता और स्वयं सिद्ध पांडे, द्वितीय अनिका सिंह और ईशान रघुवंशी और तृतीय स्वाति और श्रुति थीं। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में राहुल मल्लिक प्रथम, निकिता पठनीय द्वितीय और शाश्वत तृतीय विजेता रहे।

क्विज में प्रथम स्थान संजय और वंशिका, द्वितीय स्थान तान्या और प्रांजल पाटिल और तृतीय स्थान हर्ष और आदित्य ने हासिल किया। बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट में प्रथम स्थान राहुल मल्लिक, द्वितीय स्थान जीशान राजा और तृतीय स्थान शाश्वत यादव और आरुषि अग्रवाल ने प्राप्त किया।

कविता और प्रश्नोत्तरी में विद्यार्थियों ने दिखाया हुनर

हर्षित गोयल

नई दिल्ली। हिंदी विभाग की हिंदी साहित्य परिषद ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में अपना वार्षिकोत्सव 'साहित्य सागर' के नाम से 12 अप्रैल को मनाया। पहले दिन कार्यक्रम में दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें पहली प्रतियोगिता स्वरचित काव्यपाठ सुबह दस बजे और दूसरी प्रतियोगिता हिंदी प्रश्नोत्तरी दोपहर बारह बजे आयोजित की गई।

सेमिनार हॉल में हुए काव्य पाठ में करीब 20 विद्यार्थियों ने भाग लिया। उन्होंने बारी बारी से आकर कविताएं प्रस्तुत की। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में बीएमएस विभाग की अध्यापिका डॉ. कीर्ति पुनिया, हिंदी विभाग के अध्यापक डॉ. सुरेंद्र कुमार और पत्रकारिता विभाग की सुश्री सीमा भारती शामिल थीं।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रश्नों की संख्या 50 रखी गई थी और सभी प्रश्नों को हल करने की समय सीमा एक घंटा थी। प्रतियोगिता में प्रश्न हिंदी साहित्य से जुड़े थे। प्रश्नों का स्तर सामान्य रखा गया था। इसमें हिंदी विभाग के शिक्षक डॉ. रोशन लाल मीणा और डॉ. मानवेश नाथ दास निर्णायक मंडल में शामिल थे।

यह पूरा कार्यक्रम हिंदी परिषद की संयोजिका प्रो. श्रुति आनंद के निर्देशन में संपन्न हुआ। साथ ही परिषद के अध्यक्ष राम कुमार पांडेय ने अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इसे सफल बनाया।

प्रतियोगिताओं के अंत में प्रो. श्रुति आनंद ने प्रतिभागियों के सरोकार और प्रस्तुति के सकारात्मक बिन्दुओं के बारे में प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि विद्यार्थियों को कहां सुधार करना है। उद्घाटन कार्यक्रम में हिंदी विभाग के शिक्षक व उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास, प्रो. संजय कुमार शर्मा, डॉ. राजेश गौतम, डॉ. एनी रे, डॉ. अटल तिवारी सहित अनेक शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

विद्यार्थी तय करते हैं, कॉलेज दिनों को कैसे बिताना है

आस्था त्रिपाठी

- आरएलए में हिंदी पत्रकारिता का वार्षिक प्रमाण पत्र वितरण समारोह
- तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों ने अपने अनुभव भी साझा किए

नई दिल्ली। हम जब स्कूली शिक्षा पूरी करके कॉलेज में दाखिला लेते हैं तो बहुत सी चीजें बदल जाती हैं। हमारे अभिभावक हमें अपने निर्णय खुद लेने के लिए प्रेरित करते हैं। हमें अपने बस स्टॉप खुद ढूंढने होते हैं। अपना कॉलेज खुद ढूंढना होता है। साथ ही यह भी तय करना होता है कि इन कॉलेज के वर्षों को हमें कैसे बिताना है। यहां से क्या लेकर जाना है और अपना जीवन कैसा बनाना है। ये बातें प्रो राकेश कुमार ने हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग के वार्षिक प्रमाण पत्र वितरण समारोह में कहीं।

इस आयोजन में 8 मई को विभाग ने जो विभिन्न आयोजन कराए थे, उनके प्रमाण पत्र प्रतिभाग और प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को दिए गए। साथ ही पत्रकारिता परिषद् से प्रसारित होने वाले ई–न्यूज लेटर 'कैंपस कनेक्ट' और 'सम्भव' पत्रिका के विभिन्न अंकों में संपादक और उप–संपादक के पद पर कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र दिए गए, जिनमें मुख्यतः तृतीय वर्ष के विद्यार्थी शामिल थे। मीडिया प्रोडक्शन एडिटिंग सर्टिफिकेट कोर्स व पेज डिजाइन के लिए आयोजित क्वार्क एक्सप्रेस कार्यशाला में प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों को भी प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने इस आयोजन में अपना अनुभव साझा किया। जूनियर्स को पिछली गलतियों से सीखने और आगे बढ़ने को कहा। आयोजन के दौरान विभाग के शिक्षकों में डॉ. अटल तिवारी, डॉ. सीमा भारती, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा सिंह और सुश्री श्वेता आर्य शामिल हुए। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। नए सत्र में प्रगति करने के संदेश और उद्देश्य के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

विद्यार्थियों ने जानीं सामुदायिक रेडियो की बारीकियां

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में शैक्षिक आदान–प्रदान के तहत किरोड़ीमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों का एक समूह आया। वहां के हिंदी विभाग की शिक्षिका और लेखिका प्रो. प्रज्ञा के नेतृत्व में आए विद्यार्थियों का उद्देश्य दिल्ली विवि के इकलौते सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम की कार्यप्रणाली को जानना था। हिंदी के इन विद्यार्थियों को हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने क्रमवार पूरी कार्यप्रणाली से परिचित कराया।

एक मई 2024 को आए इन विद्यार्थियों का प्रो. राकेश कुमार ने स्वागत करते हुए पहले उन्हें रेडियो की बेसिक जानकारी दी। रेडियो की विकास यात्रा पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि किन परिस्थितियों में देश में रेडियो की यात्रा शुरू हुई। तत्कालीन अंग्रेजी राज में वह कैसे आगे बढ़ा, कैसे उसने लोगों में सामूहिकता की भावना भरी, कैसे उसने लोगों को शिक्षित करने, सूचना देने और उनका मनोरंजन करने की



राम लाल आनंद महाविद्यालय में किरोड़ीमल महाविद्यालय के विद्यार्थी।

अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया। प्रो. राकेश कुमार ने बताया कि आजादी के बाद जब देश की आधारशिला रखी जा रही थी, उस नींव को मजबूती देने में रेडियो का भी योगदान रहा।

उनका कहना था कि इन्हीं दशकों में भारत में टेलीविजन की शुरुआत होती है। पहले ब्लैक एंड व्हाइट फिर रंगीन प्रसारण होता है, लेकिन निचले स्तर तक हर उम्र के लोगों को कार्यक्रमों के जरिए जोड़ने का काम रेडियो ने किया। आगे चलकर समय में बदलाव लाया। रेडियो को सरकार ने अपने दायरे से थोड़ा मुक्त किया। एफएम के जरिए निजी क्षेत्रों को ला. इसेंस दिए गए। इसी की अगली कड़ी में 2004 में सामुदायिक रेडियो के लिए नीति बनी। इसके तहत सामाजिक ताना–बाना, क्षेत्रीय भाषिक संरचना व संस्कृत का प्रचार–प्रसार करना था। इसी नीति के तहत राम लाल आनंद महाविद्यालय में रेडियो तरंग की स्थापना करीब डेढ़ साल पहले की गई। इस केन्द्र का पहला लक्ष्य विद्यार्थी हैं। फिर 10–12 किमी की परिधि में आने वाला समाज है। उसी को केन्द्र में रखकर कार्यक्रमों का निर्माण होता है।

प्रो. राकेश कुमार ने कहा कि रेडियो तरंग को 90.0 एफएम फ्रीक्वेंसी के साथ फेसबुक पेज, स्पॉटीफाई, अमेजन म्यूजिक, इंस्टाग्राम सहित ऑडिबल पर भी सुना जा सकता है।

दूसरी कड़ी में इन विद्यार्थियों को रेडियो तरंग के स्टूडियो का भ्रमण कराया गया। सभी विद्यार्थियों को कार्यक्रम बनाने के लिए स्क्रिप्ट लिखने के विषय दिए गए। सभी को लिखने के टिप्स प्रो. राकेश कुमार ने दिए। तैयार स्क्रिप्ट की बारीकियों से उन्हें अवगत कराया। अंत में विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित व दूसरे कवियों की कविताओं की रिकॉर्डिंग कराई। प्रो. प्रज्ञा ने इस सहयोग के लिए प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार सहित रेडियो तरंग की टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया।

लेखिका प्रो. प्रज्ञा का अभी हाल में 'कांधों पर' शीर्षक से उपन्यास आया है। रेडियो तरंग की टीम के आग्रह पर प्रो. प्रज्ञा ने इस उपन्यास की रचना प्रक्रिया पर रेडियो के लिए एक संक्षिप्त रिकॉर्डिंग की।

बातचीत में उन्होंने बताया कि उपन्यास की रचना प्रक्रिया क्या रही, उपन्यास मुख्य रूप से किन मुद्दों को उठाता है। उन्होंने बताया कि यह उपन्यास विकास और विस्थापन के मूल सवालों को उठाता है और गरीब बस्तियों में रहने वालों के जीवन को गहराई से रेखांकित करता है।

रेडियो ने समाज को जोड़ने का काम किया है

रेडियो स्किल डेवलपमेंट कोर्स

खुशी

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के हिंदी पत्रकारिता एवं जन. संचार विभाग की ओर से एक महीने का स्किल डेवलपमेंट सर्टिफिकेट कोर्स इन रेडियो प्रोग्रामिंग एंड प्रोडक्शन चलाया गया। इसमें विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने एक महीने तक रेडियो पत्रकारिता की बा. रीकियां सीखीं। इस सर्टिफिकेट कोर्स की शुरुआत गत 10 जून को हुई थी तो समापन 12 जुलाई को हुआ।



रेडियो सर्टिफिकेशन कोर्स के उद्घाटन सत्र में प्राचार्य, शिक्षकों, अतिथियों और प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए ऑल इंडिया रेडियो के असिस्टेंट डायरेक्टर रहे जैनेन्द्र सिंह ने आज के समय में रेडियो की चुनौतियों के बारे में बताया, जिसमें रेडियो नेटवर्क के स्वामित्व, सामाजिक अपेक्षाएं और प्रसारित होने वाली सामग्री से जुड़ी चुनौतियों का ज़िक्र किया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सामुदायिक रेडियो स्टेशन के अतिरिक्त निदेशक गौरीशंकर केसरवानी ने भारत में सामुदायिक रेडियो की भूमिका समझाई। उन्होंने बताया कि कोविड महामारी के समय सामुदायिक रेडियो ने दूरदराज के इलाकों तक जागरूकता फैलाने में मदद की।

इससे पहले महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया। साथ ही अपने संबोधन में कहा कि प्रतिभागियों को इस कोर्स के दौरान रेडियो पत्रकारिता की बारीक से बारीक चीजें सीख लेनी चाहिए। महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के निदेशक प्रो. राकेश कुमार ने रेडियो पत्रकारिता के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही इस सर्टिफिकेट कोर्स की उपयोगिता को बारीकी से रेखांकित किया। कोर्स के समन्वयक डॉ. प्रदीप कुमार ने पूरे प्रारूप को अतिथियों और प्रतिभागियों के सामने रखा।

कोर्स में शामिल प्रतिभागी एक महीने तक कक्षाओं और रेडियो तरंग 90.0 एफएम के स्टेशन में रेडियो पत्रकारिता की विशेषज्ञों से बारीकियां सीखते रहे। तत्पश्चात 12 जुलाई को कोर्स का समापन सत्र हुआ। इसमें कोर्स के समन्वयक डॉ. प्रदीप कुमार ने पूरे महीने की गतिविधि पर प्रकाश डाला। इस पर बनाई गई डाक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की गई। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और रेडियो तरंग के निदेशक प्रो. राकेश कुमार ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। कोर्स के दौरान सबसे बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले तीन विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही सभी विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। कोर्स के संचालन में रेडियो तरंग की फरजीन सुल्तान और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों की अहम भूमिका रही।

योगशाला में लोगों ने कम किया अपना तनाव

●आरएलए में तीन दिवसीय योग कार्यशाला का आयोजन
●सभी विद्यार्थी, शिक्षक और कर्मचारियों ने लिया हिस्सा

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में 21 जून 2024 को 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय योग कार्यशाला का समापन हुआ, जिसके अंतर्गत योग को दैनिक जीवनचर्या का अभिन्न अंग बनाने का संदेश दिया गया। महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों, शिक्षक गण, गैर शिक्षक कर्मचारी एवं आनंद निकेतन निवासियों को भी इसमें आमंत्रित किया गया। सभी उम्र के लोगों ने इस कार्यक्रम में उत्साह के साथ हिस्सा लिया। एनसीसी एवं एनएसएस के विद्यार्थियों ने भी इस कार्यक्रम में शामिल होकर योगाभ्यास किया।



महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के प्रेरणास्पद नेतृत्व में योग एवं ध्यान समिति के सराहनीय प्रयासों द्वारा इस योगशाला के विचार को यथार्थ पटल पर साकार करना संभव हुआ। योग गुरु शिशिर पोखरियाल के मार्गदर्शन में सभी प्रतिभागियों ने भारत सरकार द्वारा जारी योग शिष्टाचार का अनुपालन करते हुए अनेक योग आसनों का अभ्यास किया। इस सामाजिक आ. उटरीच कार्यक्रम से सभी प्रतिभागियों को शारीरिक एवं मानसिक तनाव कम करने में काफी हद तक मदद मिली। महाविद्यालय प्रशासन ने बताया कि समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करने हेतु भविष्य में भी ऐसे योग शिविरों का आयोजन होता रहेगा।

कविता पाठ में आयुषी प्रथम

दिव्या

नई दिल्ली। अपनी कविता यदि बड़े जन समुदाय तक पहुंचानी है तो आपको छंद में आना पड़ेगा। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व उस समय के अनेक कवियों ने मुक्त छंद से लोगों को परिचित कराया, परंतु आजकल की युवा पीढ़ी ने उसे छंद मुक्त बना दिया। दोनों में जमीन आसमान का फर्क है और यह फर्क आजकल कविताओं में देखने को मिलता है। वर्तमान में कविताओं में छंद की बात ही नहीं होती। यह बात बतौर वक्ता अभिव्यक्ति समिति के पूर्व अध्यक्ष रवि सिंह ने राम लाल आनंद महाविद्यालय की समिति अभिव्यक्ति के आयोजन में कही।

हिंदी रचनात्मक लेखन समिति अभिव्यक्ति का आयोजन दो सत्र में विभाजित किया गया। पहला वक्ता सत्र रहा। इसमें रवि सिंह ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों को कविता के नियम बताए। कई वरिष्ठ कवियों सहित कुमार विश्वास, रवि जोशी की कुछ कविताओं के उदाहरण देकर रवि सिंह ने कविता की बारीकियों को स्पष्ट किया। सत्र में कविताओं का गायन भी किया

●कुंचित द्वितीय और रिद्धि गिरी को तृतीय स्थान मिला
●आरएलए की अभिव्यक्ति समिति का विमर्श आयोजन

गया।

दूसरा सत्र स्वरचित काव्य पाठ का रहा। यह प्रतियोगिता अंतर महाविद्यालय स्तर पर रही, जिसमें पीजीडीएवी महाविद्यालय, वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दयाल सिंह महाविद्यालय, दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म जैसे कई संस्थानों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने प्रतियोगिता में वीर रस, श्रृंगार रस और वात्सल्य रस से सत्र की रोचकता बढ़ाई।

काव्य पाठ प्रतियोगिता की निर्णायक मंडली में डॉ. शचि मीणा और डॉ. प्रदीप कुमार रहे। समिति के संयोजक डॉ. मानवेश नाथ दास भी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आयुषी गुप्ता शहीद भगत सिंह महाविद्यालय, द्वितीय स्थान कुंचित राम लाल आनंद महाविद्यालय और तृतीय स्थान रिद्धि गिरी दौलत राम महाविद्यालय को मिला। विजेताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

स्वरों को अपना बनाओ, स्वर तुम्हें अपना बना लेंगे

आर्यन यादव

नई दिल्ली। जीवन में स्मृति के रूप में संगीत की महत्ता समझाने के लिए द रजा फाउंडेशन ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के सहयोग से एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें संगीत से जुड़ी कई महान हस्तियां मौजूद रहीं।

इरफान जुबेरी, सुधा रघुराम, सुधीर चंद्रा और मीता पंडित मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद रहे। यह रजा फाउंडेशन का 91वां सत्र था, जिसका विषय था 'स्मृति के रूप में संगीत'। सभी वक्ताओं ने अपने विचार लोगों से साझा किए कि उनके जीवन में संगीत की क्या भूमिका रही, संगीत का मूल तत्व क्या है और मानव जीवन में संगीत कितना महत्वपूर्ण है। कुछ गजल और बंदिशें भी प्रस्तुत की गईं, जिन्हें सुनकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। तत्पश्चात एक प्रश्न सत्र भी रखा गया। दिल को छू लेने वाली पंक्ति 'स्वरों को पढ़ो मत, स्वरों को गाओ' के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

राम लाल आनंद महाविद्यालय ने मनाया अपना 60वां वार्षिकोत्सव

खुशी

नई दिल्ली। मुझे यह महाविद्यालय का कार्यक्रम नहीं विश्वविद्यालय का कार्यक्रम प्रतीत हो रहा है, क्योंकि इस महाविद्यालय ने इतनी उपलब्धियां जो हासिल की हैं, इन उपलब्धियों की सूची काफी लंबी है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विवि) की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संतोष तनेजा ने 9 मई को आयोजित महाविद्यालय के 60वें वार्षिकोत्सव और पुरस्कार वितरण समारोह में कही।

समारोह में विशेष सम्मानित अतिथि और प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. अश्वनी कुमार ने अपने महाविद्यालय के दिनों की यादें ताज़ा की। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय से छात्रवृत्ति और शोध के लिए 5 लाख 23 हज़ार रुपए की राशि विद्यार्थियों को दी गई है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'हसरतें' ड्रामा सोसाइटी की सिमरन अरोड़ा के जापान में और एनसीसी के एसयूओ अक्षित कटोच के वियतनाम में बेहतरीन प्रदर्शन का ज़िक्र भी किया। महाविद्यालय की ओर से गोद लिए गए अल्मोड़ा के पांच गांवों को विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा भी दे रहे हैं। पुरस्कार वितरण समारोह की शुरुआत छात्र संघ को पुरस्कृत करने से हुई। इसके बाद चयनित विद्यार्थियों को बेस्ट स्टूडेंट की श्रेणी के अवार्ड से पुरस्कृत किया गया। प्रियांशी पांडे को विश्वविद्यालय टॉपर, अक्षित कटोच को बेस्ट एनसीसी कैडेट और स्तुति ग्रोवर को बेस्ट स्पोर्ट्स पर्सन के लिए सम्मानित किया गया। बेस्ट सपोर्टिंग स्टाफ के रूप में अविनाश कुमार को सम्मानित किया गया। अनेक विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। अकादमिक तौर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आए विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।



चेयरमैन संतोष तनेजा और प्राचार्य ने विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम में राम लाल आनंद के प्रपौत्र और मलिक परिवार को अतिथि के रूप में बुलाया गया। महाविद्यालय की पत्रिका 'समदृष्टि', पत्रकारिता विभाग की पत्रिका 'सम्भव' और समाचार पत्र 'आरएलए समाचार' का विमोचन भी हुआ।

शैक्षिक भ्रमण के साथ सामूहिकता का संदेश

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने एक शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया। यह शैक्षिक भ्रमण 15 मार्च को विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार के नेतृत्व में किया गया। तीनों वर्षों के विद्यार्थी और विभाग के शिक्षक दिल्ली स्थित सुन्दर नर्सरी सुबह करीब साढ़े दस बजे पहुंचे। इस भ्रमण में विद्यार्थियों के बीच सामूहिकता का संदेश देना था। इसके लिए सभी को कुछ न कुछ खाने–पीने का सामान लाना था। बाजार को दरकिनार करते हुए सभी शिक्षक और विद्यार्थी एक से एक पकवान बना कर लाए।



संयोजक प्रो.राकेश कुमार के निर्देशन में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों ने सुंदर नर्सरी को निहारा।

सुबह नाश्ता करने के बाद शैक्षिक भ्रमण के मद्देनजर कई चीजों को निहारा। इसमें हुमायूं का मकबरा देखा गया। सुन्दर झील को निहारा गया। पर्यावरण के लिहाज से नर्सरी में सैकड़ों किस्म के फूलों और पौधों को देखा। इसके बाद सुन्दर नर्सरी में एक निश्चित जगह पर सभी लोगों ने एकत्र होकर सामूहिक रूप से लंच किया। लंच के बाद प्रतियोगिताओं का दौर शुरू हुआ। इसमें फिल्मी जानकारी पर केन्द्रित प्रतियोगिता में श्रृंगारिका के नेतृत्व वाली टीम ने बाजी मारी। खो–खो प्रतियोगिता में हर्षित की टीम ने जीत का परचम लहराया। इसके साथ ही फिल्मी डॉयलॉग से लेकर गीत और कविताएं भी बच्चों ने पेश कीं। अंत में सफाई अभियान चलाया गया। विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, सुश्री सीमा भारती, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा सिंह, सुश्री श्वेता आर्या सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
अनुराग
उप–संपादक
खुशी